निस्केयर
NISCAIR

विज्ञान प्रगति

दिसम्बर 2016

सम्पादक
**डॉ. बालकराम**

प्रोडक्शन अधिकारी
**पंकज गुप्ता**
**एस. पी. सिंह**

कला अधिकारी
**नीरू विजन**

कम्पोज़िंग
**मीरा देवी**

वरिष्ठ बिक्री एवं वितरण अधिकारी
**लोकेश कुमार चोपड़ा**

आवरण
**नीरू विजन**

## स्मॉग का कहर

सदियों से बुराई पर अच्छाई की जीत के लिए दशहरा व दीपावली के त्यौहार मनाये जाते रहे हैं। इस मौसम में बेसब्री से हल्की गुलाबी ठंड के आनन्द का इन्तजार रहता है। पहले समय में दीपावली पर सरसों के तेल से मिट्टी के दिए जलाए जाते थे जिससे वातावरण शुद्ध होता था। अपने आस-पास लोग मिठाईयां बांटते तथा खुशी मनाते थे। लेकिन अब इस खुशी को मनाने के लिए समृद्ध लोग शहर के एक कोने से दूसरे कोने तक अपने वाहनों से मिठाईयां व गिफ्ट देने जाते हैं तथा थोक में पटाखे छोड़ते हैं जिसका परिणाम पर्यावरण प्रदूषण के रूप में हमारे सामने है।

इन्हीं पटाखों से प्रदूषण फैल रहा है। परिणामस्वरूप बच्चे, बूढ़े, हृदयरोगी व आम आदमी सभी स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं झेल रहे हैं। वातावरण के प्रदूषित होने से पूरा शहर कराह रहा है। इस बार की दिपावली में तो सारी हदें पार हो गईं। देश के अनेक शहरों में स्मॉग ने कहर ढा दिया। 30 अक्तूबर से 7 नवम्बर तक समूचे एनसीआर व दिल्ली क्षेत्र में अघोषित कर्फ्यू जैसी स्थिति हो गई। स्कूलों की छुट्टी करनी पड़ी। रियल स्टेट व मेट्रो के कार्य बन्द करने पड़े। प्रदूषण से बचने के लिए लोग मास्क ढूँढ रहे थे लेकिन उनकी भी कमी पड़ गई।

स्मॉग (Smog) में स्मोक, फॉग और जहरीली हवा जैसे- सल्फर डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड आदि की प्रचुरता होती है जिस कारण दृश्यता बाधित हो रही है, आंखों में अत्यधिक जलन, नाक, कान व गले में संक्रमण हो रहा है। लोग ठीक से सांस भी नहीं ले पा रहे हैं। इसी दौरान देश के कुछ भागों के किसानों द्वारा पराली जलाने की भी खबरें आ रही हैं। वायु की गति लगभग शून्य हो गई। परिणामस्वरूप स्मॉग से लोग बेहाल हो गए। अस्पतालों में अचानक रोगियों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हो गयी। इस प्रकार के प्रदूषण पर यदि समय रहते नियंत्रण नहीं पाया गया तो वर्ष 1962 के लंदन जैसे हालात हो सकते हैं, वहां जहरीली हवा से फैले प्रदूषण के कारण लगभग 4 हजार लोगों की मृत्यु हो गई थी।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि दिल्ली में दिनांक 6 नवम्बर को पीएम यानी पार्टिकुलेट मैटर का स्तर 588 था जबकि निर्धारित मानक स्तर 60 माइक्रोग्राम क्यूबिक मीटर है तथा पीएम 10 का स्तर 844 था जिसका निर्धारित मानक 100 माइक्रोग्राम क्यूबिक मीटर होता है। इस समस्या के लिए हम एक-दूसरे को जिम्मेदार ठहराते हैं, जबकि हम सभी लोग इसके लिए जिम्मेदार हैं। सभी लोगों को इस समस्या के कारणों पर विचार करना होगा तथा इससे उबरने के उपायों जैसे- साइकिल व सार्वजनिक वाहनों के उपयोग आदि पर विचार करना होगा। सफाई करते समय पानी का छिड़काव करना चाहिए। अधिक सुख सुविधाओं के लिए जनरेटरों के प्रयोग से बचना चाहिए। कूड़ा-करकट को जलाने के बजाय उससे कम्पोस्ट खाद बनाएं। रियल स्टेट के करोबारी अपने क्षेत्र में उड़ रही धूल पर नियंत्रण के उपाय करें। औद्योगिक क्षेत्रों से निकल रही गैसों पर विशेष नियंत्रण के उपाय करने चाहिए।

यह देश हमारा है तथा हमारे द्वारा फैलाये जा रहे प्रदूषण से आम जन जीवन प्रभावित हो रहा है, साथ में हम भी प्रभावित हो रहे हैं। इस गंभीर समस्या को देखते हुए सभी मिलकर प्रण करें कि हम प्रदूषण पैदा करने के कारक नहीं बनेंगे तथा दूसरों को ऐसा न करने की सलाह भी देंगे। इस समस्या से निजात पाने के लिए दुनियाभर में प्राकृतिक रोकथाम के साथ-साथ यांत्रिक रोकथाम के उपाय भी जोरों से तलाशे जा रहे हैं। अनेक देशों ने जहरीली हवा को प्राणवायु बनाने के लिए कुछ आविष्कार किए हैं। हमें भी इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

आपको यह अंक कैसा लगा, प्रतिक्षा रहेगी।

**मूल्य**
एक अंक : 30.00 रुपये
एक वर्ष : 300.00 रुपये
दो वर्ष : 570.00 रुपये
तीन वर्ष : 810.00 रुपये
विदेशी वार्षिक सदस्यता : 65$
शिकायत : 011-25841647
ई-मेल : lkc@niscair.res.in

सम्पादकीय : 011-25841769, 011-25846301, 04-07/370
प्रोडक्शन : 011-25847353, 25846301, 04-07/217, 337
विज्ञापन : 011-25843359
बिक्री : 011-25841647, 25846301, 04-07/286, 289
फैक्स : 011-25847062
ई-मेल : vp@niscair.res.in
वेब साइट : http://www.niscair.res.in

© राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान
लेखकों के कथनों ओर मतों के लिये सी.एस.आई.आर. -राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान, डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली - 110 012 उत्तरदायी नहीं है।
पत्रिका से संबंधित सभी विवाद दिल्ली न्यायालय द्वारा ही निपटाये जायेंगे।